रेडियो प्रसारण में कॅरिअर

सुरेश कुमार वर्मा

इक्कीसवीं शताब्दी सूचना, संचार एवं मनोरंजन का युग है। मास मीडिया, अर्थात रेडियो, टीवी, फिल्मों, विज्ञापन, समाचार मीडिया, समाचारपत्रों तथा पत्रिकाओं की किसी भी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इसने रोज़गार के अनेक अवसर भी सृजित किए हैं।

रेडियो, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का पितामह एक बेजोड़ एवं आकर्षक माध्यम–दस्ती और वैयक्तिक है – जो अपने श्रोताओं को प्रस्तुतकर्ताओं तथा केंद्रों से असाधारण संबंधों का विकास करने के लिए प्रोत्साहित करता है। रेडियो प्रसारण एक ऐसा अत्यधिक प्रभावी एवं कम लागत का सक्षम माध्यम है, जो जन–साधारण में सूचना, शिक्षा का प्रसार करता है और उनका मनोरंजन करता है। जन संचार के अन्य माध्यमों से अलग रेडियो एक स्थायी, रूचिकर तथा श्रोता–अनुकूल साधन है। पिछले 90 वर्षों के दौरान रेडियो सामूहिक श्रवण से व्यक्तिगत, एनालॉग से डिजिटल, ए.एम. से एफ.एम, सार्वजनिक से निजी और उद्घोषक से आर.जे. जैसे रूपों में परिवर्तित हुआ है। इसने अपना आकार, अपना प्रारूप, अपनी समय–अवधि और अपने कार्यक्रमों में बदलाव किया है, किंतु इसकी सर्वव्याप्ति न केवल विकासशील देशों में बल्कि विकसित राष्ट्रों में भी यथावत रही है। किंतु एक बात निश्चित है कि रेडियो को ऐसे सृजनशील एवं प्रतिभावान व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो इनमें विविध प्रकार के रुचिकर तथा विभिन्न भूमिकाएं निभा सकें।

रेडियो हमेशा की तरह महत्वपूर्ण रहा है। हमने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक सार्वजनिक सेवा प्रसारण, उदारीकरण, निजीकरण एवं सार्वभौमिकरण की लहर के बाद एक समृद्ध वाणिज्यिक रेडियो उद्योग प्रसारण के बदले नैरोकॉस्टिंग के एक भाग के रूप सामुदायिक रेडियो के विकास की सशक्त परम्परा देखी है। रेडियो प्रसारण की कला का अनुभव केवल उस माध्यम की प्रकृति का जानकार होने के बाद ही किया जा सकता है, जिसमें निष्पादक अपने श्रोताओं के सामने नहीं होते हैं। रेडियो के सभी कार्यों में विशेषज्ञतापूर्ण प्रशिक्षण तथा योग्यता आवश्यक होती है, किंतु कार्यक्रम प्रस्तुति केवल अनुभव से ही सीखी जा सकती है।

रेडियो प्रसारणकर्ता बनने की अभिरुचि

जनता के प्रति रेडियो उद्योग का दायित्व अत्यधिक ऊ ँचा है और इसमें गुणवत्तापूर्ण मानकों के साथ समय–सीमा का पालन किया जाना चाहिए। रेडियो प्रसारणकर्ताओं को कुछ विशिष्ट कुशलताओं तथा गुणों की आवश्यकता होती है। इनमें से कुछ कुशलताएं तथा गुण अनुभव द्वारा विकसित होते हैं। किंतु अन्य कुशलताएं तथा गुण किसी भी मीडिया व्यावसायी में होने की अपेक्षा की जाती है। अपने लिए आप इनका मूल्यांकन स्वयं कर सकते हैं।

लेखन, कार्यक्रम प्रसारण का मूल घटक होता है। इस क्षेत्र में आपकी सफलता का निर्धारण आपकी अच्छी लेखन क्षमता से होता है। अच्छा तथा प्रभावी लेखन भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उपकरणों को हस्तन करने की आपकी क्षमता। एक प्रसारणकर्ता के रूप में, आपको अपने आस–पास के परिवेश के प्रति जिज्ञासु होना चाहिए। चूंकि, आप संचार–व्यवसाय में हैं, इसलिए आप साहित्य, पत्रिकाएं तथा समाचारपत्र पढ़ें और विभिन्न रेडियो स्टेशनों पर ध्यान दें तथा वर्तमान घटनाओं के बारे में जानकारी रखें। आप किसी जटिल कहानी से उसके सार को ग्रहण करने की क्षमता का अपने में विकास करें और उसके बाद अनिवार्य तथ्यों को स्पष्ट, संक्षिप्त तथा रोचक रूप में प्रस्तुत करें। इससे श्रोताओं को प्रस्तुत की जाने वाली प्रस्तुति समझने, आत्मसात करने तथा याद रखने में सहायता मिलती है।

प्रसारणकर्ता को दबाव में कार्य करना सीखना चाहिए। कभी–कभी समाचारों जैसे कुछ माध्यमों में समय–सीमा के पालन की मांग होती है। इसके लिए कठोर अनुशासन तथा आपके कार्य के प्रति आपकी निजी वचन–बद्धता की आवश्यकता होती है। कई बार यह लगने पर कि विश्व आपके पीछे भाग रहा है, आपको अपनी आदतों में तीव्रता तथा कुशलता लाने और शांतचित्त बने रहने की आवश्यकता होती है। जनता अच्छे प्रसारणकर्ता को पसंद करती है। आपके द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली कहानियों का स्रोत भी जनता होती है। जनता जो कहती है उसे सुनें, उनकी अभिव्यक्ति का अनुभव करें क्योंकि ये तथ्य ही आपके कार्यक्रम को आधार देते हैं, कोई भी प्रसारणकर्ता जनता को ध्यानपूर्वक समझे और उनसे सहानुभूति रखे। प्रसारण एक अत्यधिक नियंत्रित उद्योग, अपेक्षाओं तथा अनुशंसा वाला क्षेत्र है। यहां कानून तथा विनियम इस तथ्य पर प्रभाव डालते हैं कि आप कहानियों को कैसे लेते हैं और प्रस्तुत करते हैं। आपको इस जानकारी की आवश्यकता होगी कि किस की अनुमति है और किस की नहीं, क्या अधिक जरूरी है और क्या कम।

प्रसारणकर्ता को कार्यक्रम प्रस्तुत करने में प्रयोग में लाए जाने वाले उपकरणों की क्षमता तथा सीमाओं का पता होना चाहिए। उपकरण प्रसारण पत्रकार का प्रस्तुति साधन होते हैं। रिकॉर्डर, माइक्रोफोन, सम्पादन सॉफ्टवेयर आदि किसी कहानी को प्रस्तुत करने में प्रसारणकर्ता की क्षमता को बढ़ाते हैं।

किसी भी प्रसारणकर्ता के लिए सहज बुद्धि होना अनिवार्य है। उसे अस्पष्ट स्थितियों के बारे में जानकारी लेने के लिए उन व्यक्तियों से प्रश्न पर प्रश्न पूछने चाहिए, जिनका वे साक्षात्कार ले रहे हों, किंतु विषय का महत्वपूर्ण पहलू उनके पास होना चाहिए। उसमें जिज्ञासा, परिप्रेक्ष्य तथा एक स्वस्थ विश्वास भावना होनी चाहिए। एक उत्सुक प्रसारणकर्ता जहां तक संभव हो सभी तथ्यों की जानकारी लेनी चाहिए और उसे बौद्धिक रूप में सतर्क रहना चाहिए। किसी कहानी को पूरा करने के लिए उसे ऐतिहासिक तथा अन्य उदाहरणात्मक सूचना प्राप्त करने के लिए संदर्भ पुस्तकों तथा क्लिपिंग फाइलों की जानकारी होनी चाहिए। चूंकि एक प्रसारणकर्ता अनुभव संजोता है, इसलिए वह ज्ञान–भंडार होता है और वह विभिन्न प्रकार के संगठनों की प्रकृति का जानकार होता है। उसमें सूचना लेने, उसका विश्लेषण करने और उस रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता होनी चाहिए जिस रूप में जनता तथा श्रोताओं को उसे समझना है। इस कुशलता का विकास करने के लिए अच्छी योग्यता तथा कुछ अनुभव होना आवश्यक है। किसी भी प्रसारणकर्ता में अन्य तथ्यों के होने से ज्यादा जरूरी है उसमें आत्म–विश्वास होना।

क्या मुझे कोई रेडियो पाठ्यक्रम करना चाहिए

एक अच्छे स्तर की शिक्षा और व्यापक योग्यता आपको सभी कॅरिअर में सहायता करती है। अधिकांश रेडियो प्रसारणकर्ता न्यूनतम स्नातक डिग्रीधारी होते हैं, यह डिग्री किसी भी विषय में हो सकती है। जन–संचार में स्नातकोत्तर या इस क्षेत्र में डिप्लोमा योग्यता रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुति का ज्ञान बढ़ाती है, क्योंकि यह इसके पाठ्यवृत्त का अनिवार्य भाग है। लघु पाठ्यक्रमों के माध्यम से रेडियो कला सीखने के लिए भारी धन–राशि व्यय करना जरूरी नहीं है। प्रसारण व्यवसाय में आने के तीन मुख्य प्रवेश द्वार हैं। सार्वजनिक सेवा प्रसारण में स्नातक ऑडिशन परीक्षा उत्तीर्ण करने और वाणी प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद प्रसारण क्षेत्र में कार्य–आधार पर आते हैं। व्यावसायिक रेडियो केंद्र आर.जे. में वे घंटों के आधार पर मानदेय या कभी–कभी एक निश्चित पैकेज प्राप्त करते हैं। सामुदायिक रेडियो वेतन नहीं देता तथा स्वयंसेवा यदि, औपचारिक शिक्षा नहीं भी रखता हो तब भी वहां प्रस्तुति कर सकता है। इस क्षेत्र में आने के नए इच्छुक व्यक्ति इस कार्य में अपने कौशल का विकास करते हैं। प्रशिक्षणार्थी किसी अनुभवी प्रसारणकर्ता के साथ जुड़ सकते हैं और अपना निजी कार्य धीरे–धीरे चालू करने से पहले अनुसंधान में अथवा साक्षात्कार संचालन में उनकी सहायता कर सकते हैं। नियोक्ता उन्हें रिकॉर्डिंग तथा सम्पादन उपकरणों का उपयोग करने का तकनीकी प्रशिक्षण दे सकते हैं।

इस क्षेत्र में कॅरिअर की उन्नति सामान्यतः किसी बड़े केंद्र या कार्यक्रम में जा कर की जा सकती है।

रेडियो में कार्य करने वाले व्यक्तियों का कार्य–प्रोफाइल

केन्द्र निदेशक या केन्द्र प्रबंधक

केंद्र निदेशक या केंद्र प्रबंधक रेडियो केंद्रों, कार्यक्रमों के संचालन, इंजीनियरी एवं प्रशासन स्टाफ दल के लिए यह सुनिश्चित करने के लिए सम्पूर्ण प्रभारी एवं उत्तरदायी होते हैं कि निर्माण, श्रोताओं तथा राजस्व के संबंध में केंद्र के लक्ष्यों को पूरा करें। केंद्र निदेशक के कार्य, विभिन्न प्रकार के रेडियो केंद्रों, केंद्र कैसे निधि–प्राप्त करता है, जिस संगठन से केंद्र संबंधित है उसके आकार तथा केंद्र के प्रबंधन दल में विभाजित दायित्वों के आधार पर अलग–अलग होते हैं। यह कार्य अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है और इस कार्य में लंबे समय तक कार्य करना निहित है।

रेडियो केंद्र निदेशक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए :–

- दबाव में प्रभावी रूप में कार्य करने, तीव्र गति से प्रतिक्रिया तथा निर्धारित समय–सीमा का पालन करने की क्षमता।
- मूल विचार सृजित करने की अभिरुचि तथा उन्हें सम्प्रेषित करने के उपायों के बारे में सृजनात्मक रूप से सोचना।
- उत्कृष्ट संचार एवं प्रस्तुति कौशल
- वाणिज्य एवं वित्त कौशल
- विश्वास एवं कृतसंकल्प
- रेडियो उद्योग, कार्यक्रम शैलियों, श्रोता संख्या, विधि, नीतिशास्त्र, कॉपीराइट एवं संगीत आदि का व्यापक ज्ञान।

सहायक केंद्र निदेशक

सहायक केंद्र निदेशक कार्यक्रमों के नियोजन तथा प्रस्तुति से संबंधित सभी मामलों में निदेशक की सहायता करता है, वह कार्यक्रम कार्यपालक, निर्माताओं तथा अन्य निर्माण–स्टाफ/स्टाफ–कलाकारों के कार्य का पर्यवेक्षण करता है, वह कार्यक्रम प्रशासन के भाग के लिए जिम्मेदार होता है।

...शेष अगले अंक में

*लेखक सुरेश कुमार वर्मा ए.जे.के. जन संचार अनुसंधान केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में सहायक प्रोफेसर (रेडियो प्रोडक्शन) हैं। ई–मेल : **askverma@gmail.com***